तिनों तो सस्ता किया, जिनों नहीं भरोसा निदान।
या विध आपे अपना, हलका करें कुरान।। ४९ ।।

इन्होंने कुरान को इतना सस्ता बना दिया है कि उसके वचनों पर भरोसा नहीं करते। इस तरह से स्वयं ही कुरान को हलका करते हैं।

महामत केहेवे यों कर, ए पढ़े बड़े कुफर।
बातून नजर इन को नहीं, तो कजा की न हुई खबर।। ५० ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि यह पढ़े-लिखे बड़े लोग ही काफिर हैं। इनकी नजर बातूनी नहीं है, इसलिए इनको कजा के दिन की खबर नहीं है।

।। प्रकरण ।। ४० ।। चौपाई ।। १५९० ।।

सनन्ध–पत्री बड़ी

यह पत्री मेड़ते में बांग सुनने के बाद सुन्दरसाथ को लिखी है।

तुमको देऊं सुख जागनी, साथजी मेरे आधार।
भेख धरे जो वासना, छोटे बड़े नर नार।। १ ।।

हे मेरे साथजी! मैं तुमको जागनी के सुख देता हूं। तुम मेरी आत्मा के आधार हो और परमधाम की वासना हो। यहां आकर नर-नारी का भेष धारण किया है, जिनमें कोई गरीब है कोई अमीर है।

सुनियो भीम मकुंदजी, ऊद्धव केसो स्याम।
हम पाती पढ़ी महंमद की, सब पाई हकीकत धाम।। २ ।।

हे भीम भाईजी, मुकंददासजी, उद्धवजी, केशोदासजी तथा स्याम भट्टजी! मैंने मुहम्मद साहब की चिट्ठी (कुरान) पढ़ी। उसमें हमारे घर की सारी हकीकत है।

अपने घर की इसारतें, और न समझे कोए।
और कोई तो समझे, जो कोई दूसरा होए।। ३ ।।

यह अपने घर की बातें दूसरे नहीं समझ सकते। दूसरा कोई उस घर का है ही नहीं, तो समझेगा कैसे?

वतन की बातें सबे, पाई हमारी हम।
सो ए रोसन करत हों, कहियो साथ को तुम।। ४ ।।

हमारे घर की सारी बातें इसमें हमको मिलीं। वह मैं तुमको बताता हूं। तुम भी सुन्दरसाथ को कहना (बताना)।

किया बरनन श्री धाम का, कई विध लिखे निसान।
साथ को सुख उपजावने, ठौर ठौर किए बयान।। ५ ।।

इसमें परमधाम का वर्णन और कई तरह के निशान हैं। सुन्दरसाथ को सुख देने के वास्ते अलग-अलग ठिकाने पर समाचार लिखा है।

जमुना जरी किनार पर, कई दयोहरियां तलाब।
भांत भांत रंग झलकत, यों कई जवेर जड़ाव।। ६ ।।

यमुनाजी के किनारे पर मोती जड़े हैं और हौज कौसर तालाब के चारों तरफ दयोहरियां (गुमटियां) हैं, जिनमें तरह-तरह के रंग और जवाहरात जड़े हुए झलकते हैं।

Nijanand App

नीर उजले खीर से, खुसबोए जिमी रेत सेत।
पसु कई विध खेलहीं, यों कागद निसानी देत।।७।।

परमधाम का पानी दूध से भी अधिक साफ है। परमधाम की रेत चमकदार है और खुशबू देती है। पशु कई तरह के खेल खेलते हैं, ऐसा कुरान में लिखा है।

सबज बन कई रंग के, जवेर कई झलकत।
सैयां बरनन इसारतें, कई पंखी मिने घूमत।।८।।

कई रंग के वहां वन हैं। कई तरह के जवाहरात झलकते हैं। हे सुन्दरसाथजी! थोड़ा-सा वर्णन इशारे मात्र से लिखा है। वहां वनों में कई प्रकार के पक्षी घूमते हैं।

कह्या मैं तारतम तुम को, मूल वचन जिन पर।
सो सारे इनमें लिखे, निसान अपने घर।।९।।

परमधाम के मूल वचनों की याद दिलाते हुए मैंने जो तारतम वाणी से पहचान कराई थी, वही सारी बातें अपने घर की इसमें लिखी हैं।

ऊपर से तले आए के, सब बैठियां खेल देखन।
भेली रूह भगवान की, हुकम हुआ सबन।।१०।।

ऊपर (तीसरी भोम) से नीचे आकर (मूल मिलावा में) खेल देखने बैठीं। अक्षर भगवान की सुरता भी (अक्षर धाम में) साथ ही खेल देखने बैठी। तब श्री राजजी महाराज का हम सब पर खेल देखने का हुकम हुआ।

हुई रात सबन को, तिन फेरे खेल में मन।
सोई रात सोई साइत, पर भूल गैयां वह दिन।।११।।

हम सब फरामोशी में हो गए जैसे रात्रि हो गई हो। जिससे हमें ऐसा लगा कि हम खेल में आ गए। वहां वही समय है और वही दिन है, परन्तु खेल में आकर हम भूल गए।

तीन तकरार कहे रात के, तिन तीनों के बयान।
बृज रास और जागनी, ए कई विध लिखे निसान।।१२।।

इस खेल की रात के तीन भाग कहे हैं और उन तीनों की हकीकत बृज, रास और जागनी की कई तरह से इशारतों में लिखी है।

फुरमान उसी साइत का, पिया भेज्या हम पर।
सारी विध सोई लिखी, जो कही बाई सुन्दर।।१३।।

उसी पल में धनी ने हमारे वास्ते कुरान भेजा है और उसमें सारी हकीकत लिखी है जो सुन्दरबाई (श्री देवचन्द्रजी) ने हमको बताई थी।

धाम रास और बृज की, कही सुन्दरबाईऐं जेह।
ए तो कागद नेक देखिया, देत साख सब एह।।१४।।

सुन्दरबाई (श्री देवचन्द्रजी) ने जो बृज, रास और धाम की हकीकत बताई, वह कुरान को थोड़ा देखने से ही सब गवाहियां मिलती हैं।

Nijanand App

काल माया जोग माया, तीसरी लीला जागन।
सुन्दरबाईऐं ना कहे, ए आगम के वचन।। १५ ।।

बृज कालमाया की, रास योगमाया की और तीसरी लीला जागनी की है, जो कालमाया के ब्रह्माण्ड में हो रही है। इसकी भविष्यवाणी सुन्दरबाई (श्री देवचन्द्रजी) ने नहीं की।

सुन्दरबाईऐं देखिया, दिल के दीदों मांहें।
बृज रास और धाम की, पर जागनी की सुध नांहें।। १६ ।।

सुन्दरबाई (श्यामा महारानी) ने अपने दिल की नजरों से देखा। बृज, रास की लीला और धाम का वर्णन किया, परन्तु जागनी की सुध उनको नहीं थी।

और सुख कई विध के, कई विध किए प्यार।
सुन्दरबाई के संगतें, कई औरों पाए दीदार।। १७ ।।

और कई तरह के सुख, और कई तरह के प्यार, कई तरह के दर्शन कई औरों को भी सुन्दरबाई (श्री देवचन्द्रजी) की संगत से मिले।

अंतरगत आरोगते, तीन बेर पिया आऐं।
आप भी मेवे मिठाइयां, कई हमको आन खिलाऐं।। १८ ।।

धनी तीन बार गांगजी भाई के घर (चाकला मन्दिर में) आकर आरोगते थे और स्वयं भी मेवा मिठाइयां लाकर हमको खिलाते थे।

विध विध के सुख और कई, देत दायम अनेक।
पर लीला जो जागन की, कदी वचन न पाया एक।। १९ ।।

और तरह-तरह के सुख हमको सदा देते थे, पर जागनी की लीला का एक वचन भी उन्होंने कभी नहीं बताया।

लरी सुंदरबाई पिउसों, इन आगम के कारन।
पर पाया नहीं पड़ उत्तर, एक आधा भी सुकन।। २० ।।

सुन्दरबाई (श्यामा महारानी) जागनी के लिए पियाजी से बहुत लड़ीं कि जागनी मेरे हाथ से कराओ पर इस बात का जरा भी उत्तर नहीं मिला।

इन पड़ उत्तर वास्ते, बाईजीऐं किए उपाए।
विलख विलख वचन लिखे, सो ले ले रूहें पोहोंचाए।। २१ ।।

जागनी कार्य के उत्तर लेने के लिए सुन्दरबाई (श्यामाजी) ने कई उपाय किए तथा रो-रोकर वचन चिट्ठियों में लिखे और धनी के प्रगट होने पर सुन्दरसाथ द्वारा पहुंचाई।

यों उनहत्तर पातियां, लिखियां धाम धनी पर।
तब सैयां हम भी लिखी, पर नेक न दई खबर।। २२ ।।

इस तरह उनहत्तर पातियां (पत्र) धाम के धनी श्री प्राणनाथजी को दीं। फिर पीछे हमने भी लिखीं, परन्तु एक का भी उत्तर या थोड़ा-सा इशारा भी नहीं मिला।

सो सुध सारी ल्याइया, लीला आगूं से निसान।
जागनी की सुध सब लिखी, तुम लीजो साथ चित आन।। २३ ।।

यह सारी हकीकत रसूल साहब ने पहले से ही आकर बताई। जागनी की भविष्यवाणी कुरान में बताई। हे सुन्दरसाथजी! इसको आप चित्त में धारण करना।

Nijanand App

अव्वल मध और आखिर, यामें तीनों की हकीकत।
पर ए पावें एक इमाम, जित हुकम नूर महामत।। २४ ।।

इसमें शुरू परमधाम की, मध्य बृज और रास की और आखिरी जागनी की तीनों की हकीकत लिखी है, परन्तु इसको केवल इमाम मेंहदी, जिनके पास जागृत बुद्धि और हुकम है, जान पाए।

ज्यों आया नूर तारतम, श्री देवचन्दजी के पास।
सो विध सब इनमें लिखी, ज्यों कर हुआ प्रकास।। २५ ।।

जिस तरह श्री देवचन्द्रजी के पास तारतम आया और उसका प्रकाश हुआ वह सारी हकीकत कुरान में लिखी है।

फुरमान ल्याए महंमद, सब लिखी हमारी बात।
जरा एक न घट बढ़, सब अंग निसानी जात।। २६ ।।

मुहम्मद साहब कुरान लाए उसमें हमारी सारी बातें लिखी हैं। उसमें कुछ कमी-बेशी नहीं है। ऐसे निशान मिले हैं।

श्री देवचन्दजी सों जुध किया, कुली दज्जाल जिन पर।
ईसा दो जामें पेहेरसी, सो लिखी सारी खबर।। २७ ।।

जिस प्रकार श्री देवचन्द्रजी के साथ दज्जाल ने युद्ध किया वह भी लिखा है। यह भी लिखा है कि ईसा रूह अल्लाह दो तनों में लीला करेंगे।

श्री देवचन्दजी सों हम मिले, मुझ अंग हुआ रोसन।
सो बातें सब इनमें लिखी, निसान नाम सोई दिन।। २८ ।।

हम श्री देवचन्द्रजी से मिले और हमें ज्ञान मिला। यह सब बातें इसमें लिखी हैं। निशान, नाम तथा दिन तक लिखा है।

बोहोत बातें कई और हैं, सो केते लिखों निसान।
साथ हम तुम मिलके, हंस हंस करसी बयान।। २९ ।।

कुरान में और कई बातें लिखी हैं। कहां तक उसको लिखें? हे सुन्दरसाथजी! हम तुम जब मिलेंगे तो हंस-हंसकर बातें करेंगे।

कई विध की निसानियां, जिन विध हुई जागन।
हंसते हरखे जागसी, सुख देसी सब सैयन।। ३० ।।

कई तरह की निशानियां जिनसे जागनी होगी तथा हंसते हुए खुशी में परमधाम में जागेंगी और सब साथ को सुख होगा, वह सब लिखा है।

बाल लीला और किसोर, तीसरी बुढ़ापन।
तीन अवस्था तीन ब्रह्मांड, देखाए मिने एक खिन।। ३१ ।।

बृज की बाल लीला, रास की किशोर लीला, जागनी की बुढ़ापे की लीला—इन तीन अवस्थाओं के तीन ब्रह्माण्ड एक क्षण में दिखाए।

बाबा बूढा होए खेलावसी, दे मन चाह्या सुख सब।
तीन अवस्था एक साइत में, देखाए के हंससी अब।। ३२ ।।

श्री प्राणनाथजी बूढ़े बाबा बनकर सुन्दरसाथ को खेल खिलाएंगे तथा सभी को मनचाहा सुख देंगे। तीनों अवस्थाओं की लीला एक क्षण में दिखाकर सब हंसेंगे।

Nijanand App

तीन ठौर लीला करी, देखाए तीन ब्रह्मांड।
सो तीनों एक पल में, देखाए के उड़ावसी इंड।। ३३ ।।

तीन ठिकानों पर तीन लीलाएं कीं और तीन ब्रह्माण्ड दिखाए। अब यह तीनों ही ब्रह्माण्ड एक क्षण में उड़ जाएंगे।

खेले एकै रात में, बृज रास जागन।
बेर साइत भी ना हुई, यों होसी सब सैयन।। ३४ ।।

एक ही रात में बृज रास और जागनी की लीला खेली। एक क्षण भी नहीं हुआ, ऐसा जागने पर पता लगेगा।

बीच ब्रह्मांड ना जुग कोई, बरस मास ना दिन।
खिन में सब देखाए के, दोए साखें करी जागन।। ३५ ।।

इन ब्रह्माण्डों के बीच में कोई युग, वर्ष या दिन नहीं बीते। यह तीनों एक पल में सब कुछ दिखाकर वेद और कतेब की गवाहियां देकर जागनी की।

दाना एक खस खस का, तामें देखाए चौदे भवन।
सो दाना फेर होएसी, तुम देखोगे सब जन।। ३६ ।।

एक खस खस के दाने (पल में) में चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड दिखाया। उसी पल में ही यह सभी समा जाएंगे।

पट कर बड़ा देखाइया, चौदे तबक बनाए।
तुम पर हांसी करके, देसी पट उड़ाए।। ३७ ।।

चौदह तबकों (लोकों) के ब्रह्माण्ड को बनाकर फरामोशी के परदे में बड़ा करके दिखाया। यह फरामोशी का परदा हटाकर तुम्हारे ऊपर धनी हांसी (हंसी) करेंगे।

ज्यों ज्यों होसी जागनी, त्यों त्यों उड़सी एह।
देखोगे सब नजरों, पिया हांसी करी है जेह।। ३८ ।।

जैसे-जैसे जागनी होगी वैसे-वैसे यह अज्ञान का परदा उठेगा और धनी ने जो हांसी करी है, उसे तुम आंखों से देखोगे।

पियाजीएं कई हांसी करी, सो लिखी मिने किताब।
जब सैयां सबे मिली, तब होसी बिना हिसाब।। ३९ ।।

धनी ने कई तरह से हांसी (हंसी) की है, ऐसा लिखा है। जागने पर फिर से हम मिलकर उठेंगे तो हांसी (हंसी) बेहिसाब होगी।

और भी कहूं सो सुनो, जाहेर महंमद बात।
और सबे उड़ाए के, एक रखी कदर की रात।। ४० ।।

और भी कहती हूं उसे सुनो, मुहम्मद साहब ने कुरान में लिखा है कि सब ब्रह्माण्ड का प्रलय करके लैल-तुल-कदर की रात हुई। उसे अखण्ड करके अर्थात् बृज, रास और जागनी जहां हुई उसे अखण्ड कर दिया, बाकी ब्रह्माण्डों को लय कर दिया।

Nijanand App

सब रोसनाई इनमें, सांची कहियत हैं जेह।
उतरी है पिया पास थें, रात नूर भरी है एह।। ४१ ।।

कुरान में सब ज्ञान लिखा है। वह सच्चा है। धनी के पास से हम रूहें उतरी हैं, इसलिए यह रात नूरी रात कही है।

वतन थें पिउ प्यारियां, आइयां सबे मिल।
इसी रात के बीच में, करने को सैल।। ४२ ।।

परमधाम से सब सखियां मिलकर इसी रात में सैर करने आई हैं।

पिया भेजे मलायक, रखोपे रूहों कारन।
सो संग अंदर रेहेवहीं, करत सदा रोसन।। ४३ ।।

धनी ने फरिश्ते रखवाली करने के लिए भेजे हैं। वह सब हमारे साथ अन्दर रहकर हमें सही रास्ता बताते हैं।

तबक चौदे इन में, जिमी और आसमान।
रांत बड़ी कदर की, कोई नाहीं इन समान।। ४४ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में दुनियां और आसमान के बीच में इतनी बड़ी रात्रि के समान और कोई रात नहीं है।

फिरत चिरागां इन में, एक चांद दूजा सूर।
ए तो सोर सेहेरन का, नहीं रोसन वतनी नूर।। ४५ ।।

इस रात (यह चौदह तबकों) के अन्दर चांद और सूर्य चिराग की तरह घूमते हैं। शहरों के अन्दर जैसे शोर होता है वैसे ही चौदह तबकों में धर्म, पन्थ, पैंडे सब शोर मचा रहे हैं। इनमें से कोई भी घर की सुध देने वाला ज्ञान नहीं है।

रसूलें ए जाहेर कह्या, दिन रोसन पिया वतन।
और अंधेर सब दज्जाल, जो गोविंद भेड़ा फितन।। ४६ ।।

रसूल साहब ने साफ लिखा है कि परमधाम में ही नूर (रोशनी) है। बाकी संसार सब अंधेरा है। यह गोविंद भेड़ा माया का मण्डल है।

नोट : गोविन्द भाई पटेल मरने के बाद प्रेत योनि को प्राप्त करता है और फिर उसी गांव के बाहर अपना डेरा डालता है। जो भी वहां से निकलता है उसे लालच देकर प्रेत बना लेता है। इसी प्रकार धीरे-धीरे उसने एक प्रेत-नगरी बनाई। इसे सब प्रकार सजाया। मन के लुभावने सामान सजवाए। पूरा राज्य का ठाठ-बाट बनाकर स्वयं वहां का राजा बन बैठा। सबको इसका पता चल गया कि जो इस रास्ते जाता है, प्रेत बनकर रह जाता है और कोई पार नहीं जाता। फिर कुछ समय बाद तीन महात्मा जो अपनी यात्रा पर थे, वह भी इसी रास्ते से जब निकले, उन्हें भी बहुत मना किया गया। महात्मा होने के कारण विश्वास था कि हम माया के प्रलोभन में नहीं फंसेंगे। चल पड़े। यह अनेक प्रकार के सुन्दर दृश्य देखते हैं। लुभावनी वस्तुएं देखकर मन तो ललचाता है पर याद आ जाती है कि यदि यहां की किसी वस्तु पर भी हाथ रखा या मोह छा गया तो प्रेत होकर फंस जाएंगे, इसीलिए चलते गए और किसी वस्तु पर हाथ नहीं रखा। यह सूचना गोविन्द पटेल के पास पहुंची तो वह स्वयं भागा। महात्माओं के पास आकर बड़े-बड़े प्रलोभन दिखाता है। किसी ने भी उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। अन्तिम दरवाजा निकट आ गया तो गोविन्द पटेल भी परेशान था कि यदि यह पार हो गए तो मेरी मायाजाल का भांडा फूट जाएगा। यह साधु हैं यह सोचकर तीन बढ़िया कम्बल लेकर हाजिर करता है और कहता है, महाराज! शरद ऋतु आ रही

Nijanand App

है। यह मेरी भेंट स्वीकार करो। इतने में नगरी का बाहरी द्वार आ गया। पहला साधु मालिक पर भरोसा रखते हुए पार हो गया। दूसरा ललचाया तो, पहले के पीछे निकल ही गया। तीसरा सोचने लगा अब पांव उठाकर बाहर ही तो रखना है। सर्दी आ रही है, कम्बल लेना ही ठीक है, अर्थात् मालिक का भरोसा छोड़कर जैसे कम्बल का लालच किया, हाथ में कम्बल लेते ही वह भूत बन गया। दरवाजे से पार नहीं जा सका। यह माया का ब्रह्माण्ड प्रेत नगरी है। गोविन्द पटेल भगवान विष्णु हैं, तीन साधु ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरी सृष्टि और जीव सृष्टि हैं। ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरी सृष्टि सुध आने के बाद परमधाम को नजर में लेकर भवसागर से पार हो जाएंगे। जीव समझ आने के बाद भी माया नहीं छोड़ते और माया के अन्दर ही भूत बनकर पड़े रहते हैं।

नींद को रात कदर कही, दुनी ढूंढ़ें खेल में रात।
कहे जो आजूज माजूज, ए तिन में गोते खात।। ४७ ।।

फरामोशी की रात ही कदर की रात कहलाती है। दुनियां वाले मुसलमान रमजान के महीने में कदर की रात को खोजते हैं। (पढ़े-लिखे मुल्ला) अपने अनुमान से रमजान के आखिरी सप्ताह के मध्य वाली रात अर्थात् रोजों की सत्ताइसवीं रात को कदर की रात कहते हैं। यह तो दिन और रात आजूज-माजूज की लीला है। रात्रि में यह गोते खाते हैं।

दरिया रूप अंधेरी, आदम रूप दज्जाल।
एही सरूप कुलीय का, वैर विखे लानती चाल।। ४८ ।।

यह चौदह लोकों का निराकार का ब्रह्माण्ड ही दरिया रूप है। इसमें आदमी आदम का रूप है। उसका मन जिस पर अबलीस बैठा है, आदमी को परमात्मा की राह से भटकाता है। यह आदमी का दुश्मन बना बैठा है। यही सारे कलियुग का रूप है।

आदम रूप वैराट, अनेक विध खेलत।
झूठ कुफर कुली पसरया, सब सचराचर पसु मत।। ४९ ।।

वैराट के बीच में आदमी की शक्ल में भगवान विष्णु अनेक तरह के खेल खेलते हैं। कलियुग के अन्दर झूठ और कुफ्र फैला रखा है। सब चर, अचर और पशुओं में स्वयं जीव रूप से बैठे हैं।

सुन्दरबाइऐं याको कह्या, गोविंद भेड़ा मंडल।
सोई कलजुग दज्जाल, व्याप रह्या सकल।। ५० ।।

सुन्दरबाई (श्यामाजी) ने इस ब्रह्माण्ड को गोविन्द-भेड़ा का मण्डल कहा है। इसमें कलियुग ही दज्जाल है जो सबके मन में बैठा है।

खेल कह्या है नींद का, सब खेलें बीच अंधेर।
ए जो आइयां खेल देखने, ताए खैंच लिया दिल फेर।। ५१ ।।

यह खेल सारा फरामोशी का है। इसके अन्दर सभी अज्ञान के अंधेरे में खेल रहे हैं। इसी खेल को देखने ब्रह्मसृष्टियां आईं। उनके दिलों को भी इसने अपनी तरफ खींच लिया।

जंग किया सैयां तिनसों, जो आगे कछुए नांहें।
ए भी कहें ओ ना कछू, पर उरझ रहियां तिन मांहें।। ५२ ।।

ब्रह्मसृष्टियों ने, जो कुछ भी नहीं है, उससे लगातार युद्ध किया। यह खुद भी कहती हैं कि संसार कुछ नहीं है फिर भी उसमें उलझी हैं।

Nijanand App

लई लड़ाई सैयां तिनसों, जाए पड़ियां बंध।
ना रस्सी ना बांधे जिने, पर छूट ना सके कोई फंद।।५३ ।।

मोमिनों ने इस संसार से लड़ाई तो ले रखी है और उसी के बन्धन में फंसे हैं। यदि देखा जाए तो न कोई रस्सी है, न बन्धन है, फिर भी फंसी बैठी हैं।

जुदी जातें भांतें जुदी, खड़ियां जुदे भेख धर।
जानत नीके झूठ है, तो भी पकड़ रहियां सत कर।।५४ ।।

संसार में आकर मोमिन अलग-अलग जातियों में अलग-अलग भेषों में हैं और जानते हैं कि संसार झूठा है। फिर भी इसे सच्चा समझकर पकड़े बैठे हैं।

जुदे जुदे नाम खसम के, एक नारी दूजे नर।
खुद खसम को भूल के, खेल में बेठियां सत कर।।५५ ।।

अपने धनी को भूलकर संसार को सच्चा समझ बैठे हैं और अलग-अलग देवी-देवताओं की नाम से पूजा कर रहे हैं।

पिया खजाना खरच के, आए बंध से लैयां छुड़ाए।
अब सो करें मेहेमांनियां, बस्तर भूखन पेहेराए।।५६ ।।

इसलिए पिया ने यहां आकर तारतम वाणी का खजाना खर्च करके माया के बन्धनों से मोमिनों को छुड़ाया। अब वह मोमिन अपने धनी को वस्त्राभूषण पहनाकर आवभगत (मेहमानी) कर रहे हैं।

कई भोजन मेवे मिठाइयां, तकिए सेज जवेर।
सेवक सेवा दुनियां, करसी ब्याह सुंदर।।५७ ।।

कई सुन्दरसाथ अपने धनी को सुन्दर-सुन्दर भोजनों से, सुन्दर-सुन्दर मेवा मिठाइयों से, सेवक बनकर सेवा कर रहे हैं। तकिये लगाए जा रहे हैं। सेज बिछाई जा रही है। सारी दुनियां सेवा कर रही है और नए-नए सुन्दरसाथ आ रहे हैं मानो सुन्दर शादी हो रही है।

यामें कई विध हांसियां, पियाजी लिखी चित ल्याए।
सो आप मिने बैठ के, हंससी साथ मिलाए।।५८ ।।

इस संसार में प्रीतम कई तरह से सुन्दरसाथ को हंसाएंगे और स्वयं सुन्दरसाथ में बैठकर हंसेंगे।

वैराट सब पुकारहीं, सो भी इनमें लिखे सब्द।
कई विध लीला जागनी, पर भली गाई महंमद।।५९ ।।

संसार के धर्म ग्रन्थ जो भविष्यवाणियां कर रहे हैं वह भी इस कुरान में लिखी हैं। जागनी लीला के निशानात में मुहम्मद का कुरान ही सबसे श्रेष्ठ पाया।

याही लीला सब कोई, गावत गुझ अगम।
गरजसी वैराट में, हुए जाहेर सैयां हम।।६० ।।

इसी जागनी लीला की बातें सभी धर्म ग्रन्थ गा रहे हैं। जब हम संसार में जाहिर हो जाएंगे तो इसकी गूंज सारे ब्रह्माण्ड में फैल जाएगी। सबको ज्ञान हो जाएगा।

वैराट सारा गाएसी, नर नारी चित ल्याए।
पर गावना सुन महंमद का, रेहेसी सबे अचंभाए।।६१ ।।

सारे संसार के धर्म ग्रन्थ अथवा नर-नारी ध्यान से गान करेंगे, पर मुहम्मद साहब ने जो पहले से लिख रखा है उसे सुनकर सब हैरान होंगे।

Nijanand App

महंमद बातें बोहोत हैं, सो केती लिखूं तुम।
ए बातें तब होएसी, जब मिलसी हम तुम।।६२।।

मुहम्मद साहब की बातें बहुत हैं। पर चिट्ठी में कहां तक लिखूं। जब हमं और तुम मिलेंगे तब इसकी चर्चा होगी।

महंमद कहे मैं हुकमें, सब रूहें मुझ मांहें।
मैं चल्या अर्स मेयराज को, पर पोहोंच सक्या नांहें।।६३।।

मलकी मुहम्मद श्यामा महारानी कहती हैं कि मैं श्री राजजी महाराज के हुकम से सब रूहों को साथ लेकर खेल में आई। यहां आकर मैं वापस अर्श में जाने लगी तो अर्श में जा नहीं सकी (श्री इन्द्रावती धाम के दरवाजे खड़ी रो रही थीं इसलिए नहीं जा सकी), अर्थात् परमधाम के अन्दर नहीं जा सकी।

मैं ल्याया धनीय की, इसारतें जिन खातिर।
सो ताला अजूं खुल्या नहीं, तो मैं पोहोंचों क्यों कर।।६४।।

मैं सुन्दरसाथ के लिए धनी से तारतम (कुंजी) लेकर आई थी वह ताला उस समय खुला नहीं था तो अन्दर कैसे जाएं? क्योंकि सबके वास्ते ताला खोलने का अधिकार श्री इन्द्रावतीजी को है।

ताला द्वार कजाए का, आए खोलसी जब।
कयामत रोसन करके, मिल भेले चलसी सब।।६५।।

जब श्री प्राणनाथजी आकर न्याय का ताला खोलेंगे तथा कयामत में (बहिश्तें) कायम करेंगे तब हम सब एक साथ घर चलेंगे।

बाईजीएं घर चलते, जाहेर कहे वचन।
आड़ी खड़ी इंद्रावती, है इनके हाथ जागन।।६६।।

सुन्दरबाई (श्यामाजी) ने सतगुरु श्री देवचन्द्रजी का तन छोड़ते समय साफ कहा था कि धाम के दरवाजे पर इन्द्रावती खड़ी हैं और जागनी का काम इनके हाथ से होना है।

जुदी हम से भगवान की, रूह फिरी एक सोए।
जब फिरे सुनसी हम को, तब घरों आवसी रोए।।६७।।

जब हम घर चलेंगे तो हममें से केवल अक्षर ब्रह्म की एक आत्मा अलग होगी और उसे जब यह मालूम होगा कि ब्रह्मसृष्टियां घर जा रही हैं और उससे यह सुख छिन रहा है तो वह रोकर घर आएगी।

ए जो भिस्त हमों करी, फेर एही भानसी दुख।
बुध असराफील पोहोंचहीं, तब ताए भी देसी सुख।।६८।।

सत स्वरूप में अपने जागनी के जीवों की जो बहिश्त कायम की है, उसे अक्षर ब्रह्म असराफील की बुद्धि से जागकर देखें तो उसके बिछुड़ने का दुःख मिट जाएगा और बहिश्त के सुख ही उसे आनन्दित करेंगे।

रूहअल्ला ईसा मसी, नूर नाम तारतम।
मूल बुध असराफील, ए हमारी मिने हम।।६९।।

रूह अल्लाह (श्यामाजी), तारतम, मूल बुद्धि (असराफील) यह हमारी है। यह हमारे साथ रहेंगे।

काजी कजा ऐसी करी, रही ना किसी की हाम।
हुआ महंमद खिताब मेंहेदी, मिल्या मिने इमाम।।७०।।

श्री प्राणनाथजी ने सबका न्याय इस तरह से चुकाया कि किसी को किसी प्रकार की चाहना बाकी नहीं रही। अब मुहम्मद ने मेंहदी का खिताब पाया और श्री प्राणनाथजी के तन से मिलकर इमाम कहलाए।

Nijanand App

जबराईल पिया हुकमें, रूहों करत रखोपा आए।
सोई सूरत है अपनी, पिया हुकमें लेत मिलाए।।७१ ।।

जबराईल फरिश्ता भी श्री राजजी के हुकम से रूहों की रक्षा करने के लिए आया था। वह भी अपनी ही सूरत है। धनी अपने हुकम से उसे भी अपने अन्दर मिला लेंगे (अक्षरधाम में रहेगा)।

जुदे जुदे नामें गावहीं, जुदे जुदे भेख अनेक।
जिन कोई झगड़ो आप में, धनी सबों का एक।।७२ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज के स्वरूप को संसार वाले अलग-अलग नामों से बोल रहे हैं तथा अलग-अलग रूपों में (धर्मों में) भेष बनाकर झगड़ रहे हैं। स्वामीजी कहते हैं कि अब कोई मत झगड़ो। सबका मालिक एक है और वह मैं हूं।

अब सुनो प्यारे साथजी, पिया प्रगट होत सबन।
सारों को सुख देय के, उड़ावत एह सुपन।।७३ ।।

हे मेरे प्यारे सुन्दरसाथजी! सुनो, सबके धनी प्रगट हो रहे हैं। सबको अखण्ड सुख देकर ब्रह्माण्ड का प्रलय कर देंगे।

वैराट चौदे तबक, करके नूर नजर।
कायम दिए सुख मन बंछे, ब्रह्मांड सचराचर।।७४ ।।

चौदह लोकों के सचराचर ब्रह्माण्ड को योगमाया में अक्षर की नजर तले कायम करके सबको मनचाहे सुख देंगे।

।। प्रकरण ।। ४१ ।। चौपाई ।। १६६४ ।।

सनन्ध–पत्री छोटी

प्रीतम मेरे प्रान के, आतम के आधार।
ए दिल भीतर देखियो, है अति बड़ो विस्तार।। १ ।।

श्री महामतिजी सुन्दरसाथजी से कहती हैं कि तुम मेरे प्राणों के प्रीतम हो। आत्मा के आधार हो। दिल के अन्दर विचार करके देखना, इस बात का विस्तार बहुत भारी है।

सैयां सुन दौड़ियो, सई मेरी नाहीं बिलम कछू अब।
ऐसी खबर दई महंमदें, सैयां सुन दौड़ियो सब।। २ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम्हें सुनकर दौड़ना है। मेरी बहन! (शाकुमार) अब देरी करने की बात नहीं है। मुहम्मद साहब ने ऐसी खबर दी है। सुन्दरसाथजी! सुनकर सब दौड़ना।

कागद चौदे तबक के, मैं देखी हकीकत।
सब गावें लीला जागनी, पर बड़ी महंमद की मत।। ३ ।।

मैंने चौदह तबकों के धर्म ग्रन्थों को देखा है और उनकी हकीकत को समझा है। सब भविष्य की वाणी बोलते हैं, परन्तु मुहम्मद साहब के कुरान में सबसे बड़ी बातें लिखी हैं (मुहम्मद साहब का ज्ञान सबसे अच्छा है)।

Nijanand App